Pol. sc

B. A. Part III Paper - 6th

Political Thought

Saptang Theory of Kautilya

भारतीय राजनीतिक चिंतन के इतिहास में कौटिल्य ने एक भिन्न परम्परा का प्रतिपादन किया वे अर्थशास्त्र राजनीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, लोकप्रशासन, कूटनीति के अद्भुत विधान थे। इनकी तुलना पाश्चात्य के राजनीतिक चिंतकों हॉब्स तथा Machiavelli के साथ की जाती है।

भारतीय राजनीतिक चिंतन की दो परम्पराएँ रही हैं। "एक आदर्शवाद की" जिसमें बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य तथा अर्वाचीन में विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी के नाम उल्लेखनीय हैं।

दूसरी परम्परा, शक्ति की साधना की रही है इसमें शुक्र, मनु तथा आधुनिक काल में सुभाष चन्द्र बोस के नाम उल्लेखनीय हैं। इस विचार धारा के प्रतिपादक व्यास तथा कौटिल्य थे। अमेरिकी विद्वान ने कहा था कि "राजनीति का उद्देश्य शक्ति की प्राप्ति है"। Morgenthau आज से लगभग तीन हजार वर्ष पहले कौटिल्य ने भी अपनी पुस्तक "अर्थशास्त्र" में Power approach या Political realism का प्रतिपादन किया था उसने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि जिस प्रकार लोहे को बिना लाल गर्म किए, दूसरे लोहे को कटना असंभव है उसी तरह से दो राजाओं के बीच में शांति की स्थापना का एक ही मार्ग है, वह है शक्ति"।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र राज्य की उत्पत्ति प्रकृति एवं क्रियाओं की विवेचना नहीं करता है। राज्य की उत्पत्ति में जो सिद्धान्त मनु का था, वही सिद्धान्त कौटिल्य ने भी माना है। कौटिल्य राज्य एवं राजा की उत्पत्ति साथ-साथ मानते हैं, दोनों में अन्तर केवल यह है कि जहां मनु ने दैवी सिद्धान्त को स्वीकार किया है, वहीं कौटिल्य संविदा सिद्धान्त की मान्यता देते हैं।

कौटिल्य राज्य को एक अनिवार्य संस्था मानते हैं, उनका मानना है कि राज्य की स्थापना के पूर्व एक समय ऐसा था, जिसमें मनुष्य जीवन के अधिकार की शक्ति पर आधारित था। सबल वर्ग दुर्बलों को सताते थे, निर्बल अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए लालायित रहते थे।

Scanned with CamScanner

इसप्रकार जिवन की समस्या तथा अन्य समस्याओं के कारण प्रजा ने मिलकर मनु को राजा बनाया। इसप्रकार राज्य मनुष्यों को प्राकृतिक असहनीय कठिनाईयों से छुटकारा दिलाने की आवश्यक संस्था है। "गार्नर" ने राज्य के चार आवश्यक तत्व जनसंख्या निश्चितभू-भाग, सरकार तथा सम्प्रभुता बताया है उसी प्रकार कौटिल्य ने राज्य के सात आवश्यक तत्वों की चर्चा की है, स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड एवं मित्र। कौटिल्य ने इसे राज्य की प्रकृति और अंग दोनो कहता है, कौटिल्य के द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धान्त को राज्य का सप्तांग सिद्धान्त कहा जाता है।

"मित्र" को राज्य का आन्तरिक संगठन का तत्व नहीं मानता, "मित्र" का उल्लेख विदेशनीति को ध्यान में रखकर किया गया है, आन्तरिक संगठन की दृष्टि से राज्य के मुख्य छः तत्वों की व्याख्या कौटिल्य ने प्रशासन के दृष्टिकोण से की है।

1. स्वामी (The king) :— कौटिल्य ने स्वामी को राज्य का राजा कहा है राजा राज्य का प्रधान होता है। राज्य की सफलता राजा के चारित्रिक गुण एवं नीति पर निर्भर करती है। कौटिल्य राजतंत्र शासन प्रणाली का प्रबल समर्थक है। वस्तुतः कौटिल्य के राज्य में राजा ही शासन की धूरी है, राजा ही शासन संचालन में सक्रिय रूप से भाग लेकर शासन को गति प्रदान करता है। अतः कौटिल्य ने राजा के आवश्यक गुणों योग्यताओं, नीतियों आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला है। कौटिल्य के अनुसार राजा को राजा को कुलीन, धर्मनिष्ट, सत्यवादी, विवेकी, दूरदर्शी, कृतज्ञ इत्यादि गुणों से सम्पन्न होना चाहिए। उसे काम, क्रोध, मोह, लोभ और दुर्गुणों से दूर रहना चाहिए। उसे अपने राजकोष की वृद्धि पर भी ध्यान देना चाहिए। राजा को पुर्णरूप से शिक्षित होना चाहिए क्योंकि जीसप्रकार घुन लगी लकडी स्वतः समाप्त हो जाती है उसी प्रकार अशिक्षित राजा का कुल भी स्वतः नष्ट हो जाता है। राजा को दिन, हिन, अपंग आदि की सहायता करनी चाहिए एवं विपत्ती के समय प्रजा का निर्वाह करना चाहिए। संक्षेप में कौटिल्य के अनुसार राजा को दो मुख्य कर्तव्य होते हैं प्रथम उसे अपने प्रजाजनों के हित और उसके सुख पर ध्यान देना चाहिए द्वितीय दूसरे राज्यों के क्रिया कलापों पर ध्यान रखते हुए अपने राज्य पर किसी प्रकार का बाहरी खतरा उत्पन्न न हो इसपर भी ध्यान देना चाहिए।

Scanned with CamScanner

2. अमात्य (Minister) — कौटिल्य के राजा का दूसरा आवश्यक तत्व अमात्य को मानता है। अमात्य के अन्तर्गत सिर्फ मंत्री ही नहीं, अपितु सब प्रकार के शासनाधिकारी शासन विभाग के अध्यक्ष एवं राज्य के अन्य कर्मचारी आते हैं। कौटिल्य के अनुसार राजा को मंत्रियों एवं कर्मचारियों के बिना सुचारू रूप से शासन का संचालन नहीं कर सकता है। राजा को ऐसे व्यक्तियों को अमात्य बनाना चाहिए, जो सामर्थ्यवान, बुद्धिमान एवं गुणवान हो, उन अमात्यों में से श्रेष्ठ अनुभवी व्यक्तियों को ही मंत्री बनाने की सलाह देते हैं।

कौटिल्य ने मंत्रियों की संख्या कोई निश्चित नहीं की है। उसके अनुसार राज्य के आकार एवं सामर्थ्य के अनुसार ही मंत्रियों की संख्या होनी चाहिए, उसने यह भी स्पष्ट किया है कि राजा को तीन या चार मंत्रियों से परामर्श लेना चाहिए, उससे अधिक या कम से नहीं।

कौटिल्य के अनुसार अमात्यों का कार्य राजा को परामर्श देना, जैसे कृषि, सेतुनिर्माण, राज्य की रक्षा के लिए उपाय सोचना, नये-नये गाँव बसाना उनका विकास करना इसके साथ ही अर्थ दण्ड तथा राजकीय कर की वसूली करना आदि।

3. जनपद (Territory) — कौटिल्य राज्य का तीसरा आवश्यक तत्व जनपद को मानता है। यद्यपि जनपद से उसका तात्पर्य सिर्फ भू-प्रदेश से नहीं है बल्कि राज्य के निवासी एवं उसकी जनसंख्या से भी है। "कौटिल्य के अनुसार जनता के अभाव में राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती है तथा जनपद के बिना राज्य का अस्तित्व असंभव हो जायेगा"। कौटिल्य का जनपद गाँव, संग्रहण खर्वाटिक, द्रोणमुख एवं स्थानीय (निगम) में बँटा हुआ है। जनपद में वहाँ के निवासी भी सम्मिलित हैं, अतः निवासियों के गुणों पर भी प्रकाश डाला है।

भू-प्रदेश के आकार के विषय में उसने निश्चित रूप से कुछ नहीं बताया है, लेकिन "अर्थशास्त्र" में कुछ ऐसे संकेत मिलते हैं जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि कौटिल्य राज्य के छोटे आकार के पक्ष में है। कौटिल्य ने दूसरे अध्याय के (अधिकरण के) उन्नीसवें अध्याय में कौटिल्य ने राजा को स्वयं प्रजा की देखभाल करनी चाहिए, और यह तभी संभव है, जब राज्य का आकार छोटा हो।

Scanned with CamScanner

4. दुर्ग (Fort) — कौटिल्य के अर्थशास्त्र में उन्होंने इसे आवश्यक अंग माना है, क्योंकि राज्य की रक्षा के लिए इसका अस्तित्व आवश्यक है, शत्रुओं से राज्य की रक्षा के लिए दुर्गों का जनपद में जगह-जगह पर निर्माण किया जाना चाहिए। वे चार प्रकार के दुर्गों की चर्चा करते हैं, औदक दुर्ग, पर्वत दुर्ग, धान्वन दुर्ग, एवं वन दुर्ग।

औदक दुर्ग में वे दुर्ग आते हैं, जो चारो तरफ पानी से घीरे हो, पर्वत दुर्ग वैसे दुर्ग को कहते हैं जो पर्वत श्रेणियों अथवा बड़ी-बड़ी चट्टानों से घिरा हो। धान्वन दुर्ग ऐसे मरुस्थलीय प्रदेश में बने होते हैं जहाँ न पानी हो और न घास तथा वहाँ पहुँचना शत्रु के लिए कठिन हो। तथा वन दुर्ग बीहड़ जंगलों में बना दुर्ग होता है ~~जहाँ~~ यहाँ भी शत्रुओं का पहुँचना मुश्किल हो। इन चारों दुर्गों में से प्रथम दो दुर्ग शत्रु के आक्रमण से राज्य की सुरक्षा में सहायक होते हैं, तथा अंतिम दो दुर्ग राजा की सुरक्षा में सहायक होते हैं।

5. कोष (Fund) — कौटिल्य के राज्य का पंचम तत्व कोष है। राज्य की कार्यक्षमता एवं प्रगति कोष पर निर्भर करती है। कोष के द्वारा ही सेना का भरण-पोषण किया जा सकता है। तथा सैनिकों को संतुष्ट कर राजा उनकी भक्ति और श्रद्धा को पा-सकता है। कौटिल्य ने कहा कि कोष का संग्रह धर्मपूर्वक एवं न्याय संगत विधि से होना चाहिए। अतः कोष का राज्य में महत्वपूर्ण स्थान है।

6. दण्ड (Punishment) — मनु के समान ही कौटिल्य ने ने दण्ड को राज्य का महत्वपूर्ण अंग मानता है। वह दण्ड का अर्थ सेना से लेता है, उनका कहना है कि सेना राज्य की सुरक्षा का प्रमुख साधन है। उनका कहना है कि वंशक्रम के अनुसार लोगों को सेना में भर्ती होना चाहिए, ऐसा करने से सेना निपुण और दक्ष होती है। सेना में अधिकांश क्षत्रियों को सेना में लिया जाना चाहिए क्योंकि वे वीर, निर्भिक, और युद्ध विद्या में निपुण होते हैं। वे चतुरंगी सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल सेना आते हैं में विश्वास करते हैं।

राज्य में शांति व्यवस्था बनाने के लिए उसने अपनी कृति में "धर्मस्थीय" (Civil law) तथा "कण्टकशोधन" (Criminal law) की व्यवस्था भी की है। राजा को सेना का अपने राज्य

की अरक्षता एवं निरंकुश प्रमुख बनाए रखने के लिए उपयोग करना चाहिए।

7. मित्र (Friends) — कौटिल्य के अनुसार राज्य की उन्नति के लिए या विपत्ति के समय राज्य की सहायता के लिए मित्रों की आवश्यकता होती है। अतः राजा का यह कर्तव्य है कि वह ऐसे व्यक्तियों या राजा से मित्रता करे जो, विपत्ति के समय उसकी सहायता कर सके। उनके अनुसार मित्र ऐसे हों जो पितृ - पितामह के क्रम से चले आ रहे हों। उनके अनुसार राजा को सदैव मित्रों को अपने बस में रखे और समय- समय पर उससे काम ले।

उपरोक्त राज्य के सातों तत्वों की चर्चा के बाद कौटिल्य का यह मत है कि इन सातों तत्वों में से सभी का सुदृढ एवं स्वस्थ होना चाहिए, क्यों सभी अंगों के परस्पर सहयोग से ही राज्य का संचालन सुदृढ और सुचारु हो सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि कौटिल्य का "सप्तांग सिद्धान्त" आज के राज्य के लिए भी सही प्रतीत होता है। कौटिल्य राज्य के तत्वों का वर्णन करके राजनीति के प्रति सिर्फ अपनी पैनी निगाह का ही परिचय नहीं दिया है, बल्कि राज्य जैसी अमूर्त निराकार और भावात्मक धारणा को मूर्त स्पष्ट और निश्चित करने का भी प्रयास किया है, जो बहुत हद तक सही भी है।

Scanned with CamScanner